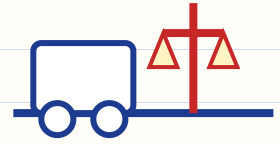


कक्षा 11 · हिंदी (आधार) · आरोह भाग 1 · गद्य खंड

पाठ 1

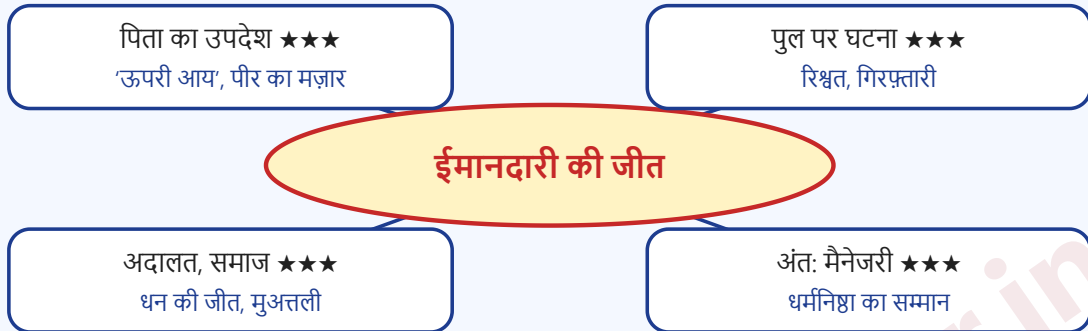
नमक का दारोगा

प्रेमचंद · कहानी (प्रथम प्रकाशन 1914) · CBSE 302



धर्म बनाम धन

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण)



लेखक परिचय

प्रेमचंद (मूल नाम **धनपत राय**; जन्म **1880, लमही**, वाराणसी; निधन **1936**)। 'उपन्यास सम्राट'; उर्दू में 'नवाबराय' नाम से लेखन। उपन्यास: **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, निर्मला, गोदान**; लगभग 300 कहानियाँ '**मानसरोवर**' (आठ भाग) में; पत्रिकाएँ: **हंस**, जागरण, माधुरी। हिंदी कथा-साहित्य को यथार्थ और आदर्श से जोड़ने वाले; भाषा सरल, मुहावरेदार, हिंदी-उर्दू का साझा रूप।

★ **परीक्षा-सुझाव: कक्षा 11 परीक्षा-ढाँचा (गद्य खंड):** प्रश्न 9: पठित गद्यांश पर **5 बहुविकल्पी** (5 अंक); प्रश्न 10: 3 में से 2 प्रश्न × **3 अंक** (60 शब्द); प्रश्न 11: 3 में से 2 × **2 अंक** (40 शब्द)। इस पाठ से सबसे संभावित: **वंशीधर / अलोपीदीन का चरित्र, पिता का उपदेश, समाज की सच्चाई, कहानी का अंत**।

एक पंक्ति में: ईमानदार दारोगा **वंशीधर** धनी ज़मींदार **पंडित अलोपीदीन** को नमक की तस्करी में पकड़ता है और चालीस हजार की रिश्वत ठुकरा देता है; अदालत में धन जीतता है, वंशीधर नौकरी खो देता है; पर अंत में अलोपीदीन स्वयं उसकी **धर्मनिष्ठा** से प्रभावित होकर उसे अपनी जायदाद का **स्थायी मैनेजर** बनाता है: **ईमानदारी की जीत**।

1.1 कथा-सार ★★★

1. नमक विभाग और समय

जब **नमक का नया विभाग** बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु (नमक) के व्यवहार पर रोक लगी, तो लोग **चोरी-छिपे** उसका व्यापार करने लगे; घूस और चालाकी का बोलबाला हुआ; अधिकारियों के **पौ-बारह** थे। पटवारीगिरी जैसे सम्मानित पद छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते; **दारोगा पद** के लिए तो **वकीलों का भी जी ललचाता** था। उस समय **फ़ारसी** का बोलबाला था; प्रेम-कथाएँ और शृंगार-काव्य पढ़कर लोग ऊँचे पदों पर पहुँच जाते।

2. पिता का उपदेश ★★★

मुंशी वंशीधर फ़ारसी पढ़कर रोज़गार की खोज में निकले। अनुभवी **वृद्ध पिता** ने समझाया: 'घर की दुर्दशा देख रहे हो, ऋण के बोझ से दबे हैं; **लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं**; मैं कगारे का वृक्ष हूँ... **नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।** ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ **ऊपरी आय** हो। **मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है** जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है; **ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है** जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती; ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है।' साथ ही: 'गरज़वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है; बेगरज़ को दाँव पर पाना ज़रा कठिन है।'

वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे; 'इस विस्तृत संसार में उनके लिए **धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक** था।' जल्दी ही उन्हें **नमक विभाग का दारोगा** पद मिला; वेतन अच्छा, ऊपरी आय का ठिकाना नहीं; पिता फूले न समाए, महाजन नरम पड़े, कलवार की आशा-लता लहलहाई, पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

3. जमुना के पुल ★★★

छह महीने में वंशीधर ने **कार्यकुशलता और उत्तम आचार** से अफ़सरों को मोहित कर लिया। **जाड़े की रात**; सिपाही-चौकीदार नशे में मस्त; दफ़्तर से एक मील पूर्व **जमुना पर नावों का पुल**। वंशीधर ने गाड़ियों की गड़गड़ाहट और मल्लाहों का कोलाहल सुना: इतनी रात को गाड़ियाँ? **'तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया'** (कुछ गोलमाल है)। वर्दी पहनकर, तमंचा जेब में रखकर पुल पर पहुँचे: किसकी गाड़ियाँ? 'पंडित अलोपीदीन की।' 'कौन पंडित अलोपीदीन?' **'दातागंज के।'**

पंडित अलोपीदीन इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार, लाखों का लेन-देन; छोटे-बड़े सब उनके ऋणी। गाड़ियों में **नमक** के ढेले। अलोपीदीन सजीले **रथ** पर, निश्चित: उन्हें **लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास** था: **'न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खेलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।'** बोले: 'बाबूजी, आशीर्वाद! हम सरकारी हुक्म तो नहीं जानते, आप घर की बात समझिए।' वंशीधर: 'हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं।'

4. रिश्त की बोली ★★★

वंशीधर ने **जमादार बदलू सिंह** को गिरफ़्तारी का हुक्म दिया। अलोपीदीन ने **एक हज़ार** की पेशकश की; वंशीधर: 'एक हज़ार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।' बोली बढ़ी: **पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस, तीस** और अंत में **चालीस हज़ार**। वंशीधर: **'चालीस हज़ार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है।' 'धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।'** अलोपीदीन जीवन में पहली बार हथकड़ियाँ देखकर मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

5. समाज की प्रतिक्रिया ★★★

'दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।' सवेरे बालक-वृद्ध सबकी ज़बान पर यही चर्चा; पंडितजी के व्यवहार पर निंदा की बौछारें, 'मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया।' **व्यंग्य:** 'पानी को दूध के नाम से बेचने वाला **ग़ाला**, कल्पित रोज़नामचे भरने वाले **अधिकारी वर्ग**, रेल में बिना टिकट सफ़र करने वाले **बाबू लोग**, जाली दस्तावेज़ बनाने वाले **सेठ और साहूकार**, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे।'

अदालत में भीड़ विस्मित थी, 'इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह **कानून के पंजे में कैसे आए**'; प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था।

6. अदालत: धन की जीत ★★★

‘न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।’ अलोपीदीन के लिए **वकीलों की सेना**; वंशीधर के पास सत्य के सिवा कोई बल नहीं, स्पष्ट भाषण के सिवा कोई शस्त्र नहीं; गवाह लोभ से डाँवाडोल; न्याय के दरबार के कर्मचारियों पर **पक्षपात का नशा**। **डिप्टी मजिस्ट्रेट** का फैसला: अलोपीदीन के विरुद्ध प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक; वह बड़े भारी आदमी हैं, थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस कल्पना से बाहर; दारोगा की **‘उद्दंडता और विचारहीनता’** से एक भलेमानुस को कष्ट हुआ; ‘नमक से मुकदमे की बढ़ी हुई **नमकहलाली** ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया’।

अलोपीदीन मुसकराते हुए बाहर निकले, रुपयों की लूट हुई; वंशीधर पर **व्यंग्यबाणों** की वर्षा। उन्हें अनुभव हुआ कि ‘न्याय और विद्वता, लंबी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोंगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।’

7. मुअत्तली, घर में अपमान

‘वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था।’ एक सप्ताह में **मुअत्तली (निलंबन) का परवाना**: ‘कार्य-परायणता का दंड मिला।’ पिता कुड़बुड़ाए: ‘हम कलवार और कसाई के तगादे सहें... आप ईमानदार बनने चले हैं। **घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे।** खेद ऐसी समझ पर! **पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।**’ ‘जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ।’ माता दुखी, पत्नी ने कई दिन सीधे मुँह बात नहीं की।

8. अंत: अलोपीदीन का आगमन ★★★

एक सप्ताह बाद संध्या को द्वार पर **सजा हुआ रथ**; पंडित अलोपीदीन आए। वृद्ध मुंशी ने खुशामद की और बेटे को कोसा। अलोपीदीन बोले: ‘मैंने हज़ारों रईस और अमीर देखे, हज़ारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा, किंतु मुझे परास्त किया तो आपने।’ उन्होंने **स्टांप लगा पत्र** रखा: वंशीधर को अपनी **सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर, छह हज़ार वार्षिक वेतन**, रोज़ाना खर्च अलग, सवारी के लिए **घोड़े**, रहने को **बंगला**, नौकर-चाकर मुफ्त। वंशीधर: ‘मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं।’ अलोपीदीन (हँसकर): **‘मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।’** ‘न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की... सौभाग्य ने मुझे वह **मोती** दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है... परमात्मा आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला **बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ** दारोगा बनाए रखे!’ वंशीधर की आँखें डबडबा आईं; काँपते हाथ से हस्ताक्षर किए; अलोपीदीन ने उन्हें **गले लगा** लिया।

प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद: कहानी यथार्थ (भ्रष्ट तंत्र, धन की जीत) दिखाती है, पर अंत **सत्य की जीत** से करती है, ताकि मानव-चरित्र पर विश्वास बना रहे।

मुंशी वंशीधर ★★★

विशेषता	प्रमाण
ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ	चालीस हज़ार ठुकराए: ‘चालीस लाख पर भी असंभव’
निर्भीक, साहसी	प्रतिष्ठित ज़मींदार को गिरफ़्तार कराया
कार्यकुशल, सजग	छह महीने में अफ़सर प्रसन्न; रात में भी चौकस
आज्ञाकारी पुत्र, पर विवेकी	उपदेश ध्यान से सुना, पर अनैतिक बात नहीं मानी
स्वाभिमानी, धैर्यवान	अदालत में व्यंग्य सहे, विचलित नहीं
विनम्र, कृतज्ञ	‘मैं इस पद के योग्य नहीं’; आँखें डबडबाईं

पंडित अलोपीदीन ★★★ (NCERT प्र. 2)

पहला पक्ष: भ्रष्ट, धन-अभिमानी: नमक की तस्करी; ‘न्याय-नीति लक्ष्मी के खिलौने’; रिश्तत की बोली; अदालत को धन से खरीदना; प्रभावशाली, वाक्पटु, चतुर व्यापारी।

दूसरा पक्ष: गुणग्राही, सहृदय: वंशीधर की ईमानदारी पहचानी, स्वयं उसके घर गए, अपनी हार मानी, उसे स्थायी मैनेजर बनाया: ‘मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।’ (उनमें व्यावहारिक बुद्धि भी है: ईमानदार

मैनेजर उनकी जायदाद की रक्षा करेगा।)

वृद्ध मुंशी (पिता)

अनुभवी, व्यावहारिक, पर भ्रष्ट सोच के प्रतिनिधि: ऊपरी आय को ईश्वर की देन मानना; बेटे की ईमानदारी पर क्रोध; धनी के आगे खुशामद। गरीबी और ऋण ने उन्हें ऐसा बनाया।

पात्र और समाज की सच्चाई (NCERT प्र. 3) ★★★

पात्र	अंश	सच्चाई
वृद्ध मुंशी	'नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना... ऊपरी आय...'	समाज में रिश्वत को सामान्य मानने की मानसिकता; धन ही प्रतिष्ठा
वकील	फ़ैसला सुनकर 'उछल पड़े'; 'वकीलों की एक सेना तैयार की गई'	न्याय-व्यवस्था का धन के आगे बिकना ; वकील सत्य नहीं, पैसे के पक्ष में
शहर की भीड़	'ग़वाला, अधिकारी वर्ग, बाबू लोग, सेठ-साहूकार... देवताओं की भाँति गर्दन चला रहे थे'	समाज का पाखंड : स्वयं भ्रष्ट लोग दूसरों की निंदा करते हैं; 'कानून के पंजे में कैसे आए', यह आश्चर्य

महत्वपूर्ण कथन ('समझाइए तो ज़रा') ★★★

कथन	आशय
पीर का मज़ार... निगाह चढ़ावे और चादर पर	पद (मज़ार) नहीं, उससे मिलने वाली ऊपरी आमदनी (चढ़ावा) देखो
धैर्य मित्र, बुद्धि पथप्रदर्शक, आत्मावलंबन सहायक	वंशीधर के पास कोई सिफ़ारिश नहीं; केवल अपने गुण
तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया	रात में गाड़ियाँ? जो संदेह हुआ, तर्क से वह पक्का हुआ
न्याय-नीति लक्ष्मी के खेलौने	धन से न्याय और नियम मनचाहे ढंग से मोड़े जा सकते हैं
दुनिया सोती थी, जीभ जागती थी	रात की घटना सुबह तक सबकी ज़बान पर; अफ़वाह की तेज़ी
पढ़ना-लिखना सब अकारण गया	पिता की दृष्टि में पढ़ाई का अर्थ 'कमाना'; बेटे ने अवसर गँवाया
धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला	ईमानदारी ने रिश्वत को ठुकरा दिया
न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध	अदालत में सत्य (वंशीधर) बनाम धन (अलोपीदीन)

NCERT अभ्यास, पूरी तरह हल

पाठ के साथ

1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर: मुंशी वंशीधर। कारण: (1) घोर गरीबी, ऋण और पिता के दबाव के बावजूद उन्होंने **ईमानदारी** नहीं छोड़ी; (2) चालीस हज़ार जैसी बड़ी रिश्वत ठुकराकर प्रभावशाली ज़मींदार को गिरफ़्तार कराया: **निर्भीकता**; (3) अदालत में हार, व्यंग्य, मुअ्तली और घर का अपमान सहकर भी **धैर्य** रखा; (4) अंत में ऊँचा पद मिलने पर भी **विनम्र** रहे। वे सिद्ध करते हैं कि सच्चाई अंततः सम्मान पाती है।

2. पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू उभरकर आते हैं?

उत्तर: पृ. 4 देखें: (1) **भ्रष्ट, धन के बल पर सब खरीदने वाला** चतुर व्यापारी-ज़मींदार; (2) **गुणग्राही, सहृदय** व्यक्ति, जो ईमानदारी की कद्र करता है और वंशीधर को मैनेजर बनाता है।

3. (क) वृद्ध मुंशी (ख) वकील (ग) शहर की भीड़: अंश उद्धृत कर समाज की सच्चाई बताइए।

उत्तर: पृ. 4 की तालिका देखें: (क) रिश्वत को सामान्य मानने की मानसिकता; (ख) धन के आगे बिकती न्याय-व्यवस्था; (ग) समाज का पाखंड।

4. 'नौकरी में ओहदे की ओर...' (क) किसकी उक्ति? (ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा? (ग) क्या आप पिता के वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर: (क) वंशीधर के **वृद्ध पिता** की। (ख) पूर्णमासी का चाँद महीने में एक दिन पूरा दिखता है, फिर घटते-घटते लुप्त हो जाता है; वेतन भी महीने में **एक दिन** मिलता है और खर्च होते-होते **समाप्त** हो जाता है। (ग) **नहीं**; ऊपरी आय (रिश्वत) अनैतिक और गैरकानूनी है; इससे समाज में भ्रष्टाचार बढ़ता है, आत्मसम्मान नष्ट होता है; ईमानदारी की कमाई ही सच्चा सुख देती है। (गरीबी के कारण पिता की विवशता समझी जा सकती है, पर उनका उपदेश उचित नहीं।)

5. कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक, आधार सहित।

उत्तर: (1) '**सत्य की जीत**' / 'ईमानदारी का फल': अंत में ईमानदार वंशीधर को सम्मान और ऊँचा पद मिलता है। (2) '**धर्म और धन**': कहानी का केंद्र धर्म (वंशीधर) और धन (अलोपीदीन) का संघर्ष है। ('धर्मनिष्ठ दारोगा' भी उपयुक्त।)

6. अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? आप कहानी का अंत किस प्रकार करते?

उत्तर: कारण: (1) वंशीधर की **ईमानदारी और धर्मनिष्ठा** से अलोपीदीन प्रभावित हुए: उन्होंने हज़ारों अधिकारी देखे, पर किसी ने उन्हें परास्त नहीं किया था; (2) **व्यावहारिक बुद्धि**: अपनी विशाल जायदाद के लिए ऐसा ही ईमानदार मैनेजर चाहिए जो कभी धोखा न दे; (3) **अपराध-बोध**: उनके कारण वंशीधर की नौकरी गई, वे उसकी भरपाई करना चाहते थे; (4) अपने भीतर के सज्जन मनुष्य का जागना। **मेरा अंत:** (नमूना) वंशीधर विनम्रता से प्रस्ताव अस्वीकार कर देते और अदालत के फैसले के विरुद्ध अपील करके अपनी नौकरी फिर पाते; अलोपीदीन को अपने अपराध का दंड मिलता: इससे संदेश जाता कि कानून सबके लिए समान है।

पाठ के आस-पास

1. वंशीधर का अलोपीदीन के यहाँ मैनेजर बनना उचित था? आप उसकी जगह होते तो?

उत्तर: उचित: अलोपीदीन ने उसकी ईमानदारी का सम्मान किया, उसे पूरी स्वतंत्रता और अधिकार दिए; वह नौकरी से वंचित, कर्ज़ में डूबे परिवार का सहारा था; ईमानदार व्यक्ति एक व्यापारी की जायदाद को भी सही ढंग से चला सकता है। **अनुचित भी माना जा सकता है:** जिस व्यक्ति को उसने अपराधी के रूप में पकड़ा, उसी की नौकरी करना सिद्धांतों से समझौता लग सकता है। **मैं होता तो:** यह शर्त रखकर स्वीकार करता कि जायदाद में कोई गैरकानूनी काम नहीं होगा।

2. दारोगा पद जैसा आज कौन-सा पद है जिसके लिए लोग लालायित रहते हैं?

उत्तर: पुलिस, आयकर, कस्टम (सीमा शुल्क), जीएसटी, परिवहन (आरटीओ), खनन, नगर निगम के भवन-विभाग आदि के पद; कारण: इनमें **अधिकार और 'ऊपरी कमाई'** की संभावना मानी जाती है। (ईमानदार दृष्टि से: आईएएस, डॉक्टर, वैज्ञानिक जैसे पद सम्मान और सेवा के अवसर के कारण भी।)

3. जब आपके तर्कों ने आपके भ्रम को पुष्ट किया हो।

उत्तर: (नमूना) एक बार मित्र कई दिनों से स्कूल नहीं आ रहा था और फ़ोन भी नहीं उठा रहा था; मुझे लगा वह बीमार है। फिर पता चला उसकी माँ अस्पताल में हैं और वह भी परीक्षा-फ़्रीस को लेकर परेशान था; सारे संकेतों (उदासी, बार-बार गैरहाज़िरी) ने मेरे भ्रम को पक्का किया कि कुछ गंभीर है; हम मित्रों ने उसकी सहायता की।

4. 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया': (क) जब पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा (ख) जब सार्थक लगा (ग) साक्षरता या शिक्षा?

उत्तर: (क) (नमूना) जब किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को सड़क पर कूड़ा फेंकते या बुजुर्ग से दुर्व्यवहार करते देखा, तब लगा कि ऐसा पढ़ना-लिखना व्यर्थ है। (ख) जब मैंने अपनी दादी के लिए बैंक का फ़ॉर्म भरा और ऑनलाइन धोखे से बचाया, तब पढ़ाई सार्थक लगी। (ग) पिता ने इसे **साक्षरता** (कमाने के साधन) के अर्थ में कहा; वंशीधर के लिए पढ़ना-लिखना **शिक्षा** (नैतिक मूल्य, विवेक) था। दोनों समान नहीं: साक्षरता अक्षर-ज्ञान है, शिक्षा व्यक्तित्व और चरित्र का विकास।

5. 'लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' यह समाज में लड़कियों की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर: उस समय लड़कियों को **बोझ** समझा जाता था; उनकी शिक्षा-विकास पर ध्यान नहीं, केवल **विवाह और दहेज** की चिंता; जैसे घास-फूस बिना देखभाल के बढ़ जाती है, वैसे ही लड़कियाँ उपेक्षा में बढ़ती थीं। यह **लैंगिक भेदभाव** और दहेज-प्रथा की सच्चाई है।

6. अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

उत्तर: ऐसे व्यक्ति धन और वाचालता के बल पर कानून को खिलौना समझते हैं; समाज भी उनसे सहानुभूति रखता है। मुझे ऐसे लोगों से **सावधान** रहना चाहिए, उनके प्रभाव में आकर गलत का समर्थन नहीं करना चाहिए; कानून सबके लिए समान है; भ्रष्टाचार की शिकायत करनी चाहिए और ईमानदार अधिकारियों का साथ देना चाहिए।

भाषा की बात

1. भाषा की चित्रात्मकता, लोकोक्तियों-मुहावरों और हिंदी-उर्दू के साझा रूप के उदाहरण।

उत्तर: **मुहावरे:** पौ-बारह होना, फूले न समाना, सिर पीट लेना, हाथ मलना, बैर मोल लेना, आँखें डबडबा आना, कलेजा काँपना। **लोकोक्ति:** घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे। **चित्रात्मकता:** 'जाड़े के दिन थे और रात का समय...', 'गाड़ियों की गड़गड़ाहट और मल्लाहों का कोलाहल'। **हिंदी-उर्दू:** मुख्तार, बरकत, गरज़, बेगरज़, हिरासत, तजवीज़, मुअत्तली, बेमुरौवत। **प्रभाव:** भाषा जीवंत, सहज, व्यंग्यपूर्ण बनी; पात्र और परिवेश सजीव हुए।

समझाइए तो ज़रा

2. 'इस विस्तृत संसार में... धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।'

उत्तर: वंशीधर के पास न कोई सिफ़ारिश थी, न धन; बड़े संसार में वे अकेले थे; उनके सहारे केवल उनके अपने गुण थे: कठिनाई में **धैर्य**, सही मार्ग दिखाने वाली **बुद्धि** और अपने बल पर भरोसा (**आत्मनिर्भरता**)।

4. 'न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खेलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।'

उत्तर: अलोपीदीन का विश्वास: **धन** से न्याय (अदालत) और नीति (नियम-कानून) को अपनी इच्छा के अनुसार मोड़ा जा सकता है; अदालत के फ़ैसले ने इसे सही भी सिद्ध किया: यह भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग्य है।

5. 'दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।'

उत्तर: घटना रात में हुई, लोग सो रहे थे, फिर भी सुबह तक खबर सबकी ज़बान पर थी: **अफ़वाहें और चर्चाएँ** बहुत तेज़ फैलती हैं; दूसरों के मामलों में रस लेना समाज का स्वभाव है।

7. 'धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।' / 8. 'न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।'

उत्तर: (7) पुल पर वंशीधर (धर्म, ईमानदारी) ने चालीस हज़ार की रिश्वत (धन) ठुकराकर उसे परास्त किया। (8) अदालत में फिर संघर्ष हुआ: एक ओर सत्य और कर्तव्य (वंशीधर), दूसरी ओर धन और वकीलों की सेना (अलोपीदीन); वहाँ धन जीता।

1, 3, 6: पृ. 4 की तालिका देखें।

कहानी का संदेश: भ्रष्ट तंत्र में ईमानदार व्यक्ति को कष्ट उठाने पड़ते हैं, पर **सच्चाई और धर्मनिष्ठा** का अंततः सम्मान होता है; ईमानदारी अनमोल 'मोती' है।

महत्त्वपूर्ण परीक्षा-प्रश्न, हल सहित

A. पठित गद्यांश (प्रश्न 9 जैसा: 5 × 1)

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है।

- (i) 'पीर का मज़ार' किसे कहा गया है? (A) नौकरी के पद को (B) वेतन को (C) ऊपरी आय को (D) ईश्वर को
- (ii) 'चढ़ावा और चादर' प्रतीक हैं: (A) पूजा के (B) ऊपरी आमदनी के (C) वेतन के (D) सम्मान के
- (iii) मासिक वेतन की तुलना की गई है: (A) बहते स्रोत से (B) सूर्य से (C) पूर्णमासी के चाँद से (D) मज़ार से
- (iv) वक्ता के अनुसार ऊपरी आमदनी में बरकत क्यों होती है? (A) वह मनुष्य देता है (B) वह ईश्वर देता है (C) वह अधिक होती है (D) वह छिपी होती है
- (v) यह उपदेश किस मानसिकता को दर्शाता है? (A) देशभक्ति (B) भ्रष्टाचार को सामान्य मानना (C) धार्मिकता (D) त्याग

उत्तर: उत्तर: (i) A · (ii) B · (iii) C · (iv) B · (v) B

B. 3 अंक (लगभग 60 शब्द)

1. 'नमक का दारोगा' कहानी में प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज और न्याय-व्यवस्था पर क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर: (1) **भ्रष्टाचार** सामान्य: नमक विभाग में घूस, 'अधिकारियों के पौ-बारह'; पिता का ऊपरी आय का उपदेश; (2) **न्याय-व्यवस्था** धन के आगे बिकी: वकीलों की सेना, पक्षपाती कर्मचारी, लोभी गवाह, ईमानदार दारोगा को ही 'उद्दंड' कहा गया; (3) **समाज का पाखंड**: स्वयं भ्रष्ट ग्वाले, बाबू, सेठ अलोपीदीन की निंदा करते हैं; ईमानदारी का दंड: मुअत्तली।

2. वंशीधर के पिता के चरित्र पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: वृद्ध मुंशी **अनुभवी**, **व्यावहारिक** पर **अवसरवादी** हैं; गरीबी, ऋण और बेटियों के विवाह की चिंता ने उन्हें ऊपरी आय को 'ईश्वर की देन' मानने वाला बना दिया; बेटे की ईमानदारी पर क्रोधित होकर कहते हैं 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया'; धनी अलोपीदीन के आने पर खुशामद करते हैं। वे उस समय की **भ्रष्ट मानसिकता** के प्रतिनिधि हैं।

3. अलोपीदीन ने वंशीधर को मनाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए?

उत्तर: (1) **मीठी बातें**: 'बाबूजी, आशीर्वाद!... आप घर की बात समझिए'; (2) अपनी **प्रतिष्ठा** का प्रभाव; (3) **रिश्वत**: एक हज़ार से शुरू करके पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस, तीस और चालीस हज़ार तक की बोली; (4) गिड़गिड़ाना, धैर्य खो देना। पर वंशीधर अडिग रहे: 'चालीस लाख पर भी असंभव है।'

4. कहानी का अंत प्रेमचंद के 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' को कैसे दर्शाता है?

उत्तर: कहानी का अधिकांश भाग **यथार्थ** है: भ्रष्टाचार, धन की जीत, ईमानदार की हार। पर प्रेमचंद मानते थे कि केवल यथार्थ निराशा पैदा करता है, मानव-चरित्र से विश्वास उठा देता है; इसलिए अंत में अलोपीदीन का हृदय-परिवर्तन दिखाकर **सत्य की जीत** का **आदर्श** रखा: ईमानदारी का सम्मान होता है।

C. 2 अंक (लगभग 40 शब्द)

1. वंशीधर ने गाड़ियों पर संदेह क्यों किया?

उत्तर: जाड़े की आधी रात को नावों के पुल पर गाड़ियों की गड़गड़ाहट और मल्लाहों का कोलाहल सुनकर उन्हें लगा कि इतनी रात गए गाड़ियाँ क्यों जा रही हैं; ज़रूर **कुछ गोलमाल** है: 'तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।'

2. डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में क्या लिखा?

उत्तर: अलोपीदीन के विरुद्ध प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं; वह बड़े आदमी हैं, थोड़े लाभ के लिए ऐसा नहीं कर सकते; दारोगा की **उद्दंडता और विचारहीनता** से भलेमानुस को कष्ट हुआ; उसकी बढ़ी हुई नमकहलाली ने विवेक भ्रष्ट कर दिया; भविष्य में होशियार रहे।

3. अलोपीदीन ने वंशीधर को कौन-सी सुविधाएँ दीं?

उत्तर: सारी जायदाद का **स्थायी मैनेजर** पद, **छह हज़ार वार्षिक वेतन**, रोज़ाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला और नौकर-चाकर मुफ्त।

4. 'मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है' का आशय?

उत्तर: वंशीधर विनम्रता से स्वयं को 'अयोग्य' कहते हैं; अलोपीदीन व्यंग्य-विनोद में कहते हैं कि उन्हें विद्वता या अनुभव नहीं, ऐसे ही 'अयोग्य' (धन से न बिकने वाले, ईमानदार) व्यक्ति की ज़रूरत है।

अभ्यास सेट

A. रिक्त स्थान / सही-गलत

1. 'नमक का दारोगा' का प्रथम प्रकाशन _____ में हुआ।
2. पंडित अलोपीदीन _____ के ज़मींदार थे।
3. वंशीधर के जमादार का नाम _____ था।
4. (सही/गलत) वंशीधर ने पच्चीस हज़ार की रिश्तत स्वीकार कर ली।
5. (सही/गलत) अदालत में अलोपीदीन को सज़ा हुई।
6. (सही/गलत) अलोपीदीन ने वंशीधर को छह हज़ार वार्षिक वेतन दिया।

B. लघु उत्तरीय (2 अंक)

1. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए वकीलों का भी जी क्यों ललचाता था?
2. वंशीधर की नियुक्ति पर घर और पड़ोस में क्या प्रतिक्रिया हुई?
3. 'घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे' किसने, क्यों कहा?
4. अदालत से बाहर निकलने पर वंशीधर को क्या अनुभव हुआ?

C. 3 अंक (60 शब्द)

1. 'नमक का दारोगा' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
2. मुअत्तली के बाद वंशीधर के घर का वातावरण कैसा था?
3. 'ईमानदारी का फल देर से मिलता है, पर मिलता अवश्य है': कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

D. HOTS

1. आज के समय में वंशीधर जैसे अधिकारी को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा?
2. यदि अलोपीदीन वंशीधर के घर न आते, तो कहानी का संदेश क्या होता?

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

1. 'नमक का दारोगा' के लेखक:
 - (A) यशपाल (B) जैनेंद्र (C) प्रेमचंद (D) शेखर जोशी
2. प्रेमचंद का मूल नाम:
 - (A) धनपत राय (B) नवाबराय (C) बालमुकुंद (D) शिवपूजन
3. कहानी का प्रथम प्रकाशन:
 - (A) 1924 (B) 1936 (C) 1905 (D) 1914
4. वंशीधर ने कौन-सी भाषा पढ़ी थी?
 - (A) संस्कृत (B) फ़ारसी (C) बांग्ला (D) अंग्रेज़ी
5. पिता ने नौकरी के पद को कहा:
 - (A) बहता स्रोत (B) पीर का मज़ार (C) पूर्णमासी का चाँद (D) कगारे का वृक्ष
6. पिता ने स्वयं को कहा:
 - (A) पीर (B) मुख्तार (C) महाजन (D) कगारे का वृक्ष
7. नावों का पुल किस नदी पर था?
 - (A) जमुना (B) गोमती (C) गंगा (D) सरयू
8. अलोपीदीन कहाँ के थे?
 - (A) बनारस (B) प्रयाग (C) दातागंज (D) कानपुर
9. गाड़ियों में क्या था?
 - (A) शराब (B) अनाज (C) कपड़ा (D) नमक
10. अलोपीदीन का किस पर अखंड विश्वास था?
 - (A) ईश्वर (B) लक्ष्मी (C) कानून (D) वकील

11. रिश्वत की अंतिम बोली:
(A) बीस हजार (B) पच्चीस हजार (C) चालीस हजार (D) एक लाख
12. जमादार का नाम:
(A) बदलू सिंह (B) भोला (C) गिरधर (D) रामसिंह
13. फ़ैसला किसने सुनाया?
(A) जज (B) डिप्टी मजिस्ट्रेट (C) कलेक्टर (D) थानेदार
14. फ़ैसले में दारोगा पर कौन-सा आरोप?
(A) रिश्वत (B) चोरी (C) उद्दंडता और विचारहीनता (D) लापरवाही
15. वंशीधर को क्या दंड मिला?
(A) तबादला (B) जेल (C) जुर्माना (D) मुअत्तली
16. 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया' किसने कहा?
(A) पिता (B) अलोपीदीन (C) माँ (D) पत्नी
17. अलोपीदीन वंशीधर के घर किसमें आए?
(A) सजे हुए रथ (B) घोड़े (C) बैलगाड़ी (D) पालकी
18. वंशीधर का वार्षिक वेतन:
(A) दस हजार (B) चालीस हजार (C) एक हजार (D) छह हजार
19. अलोपीदीन ने वंशीधर को क्या कहा?
(A) योग्य (B) मोती (C) नमकहराम (D) मूर्ख
20. कहानी का मूल संदेश:
(A) धन की जीत (B) भाग्य (C) ईमानदारी की जीत (D) प्रेम
- 1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

- कथन: वंशीधर ने अलोपीदीन को गिरफ्तार कराया। कारण: वे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ थे।
- कथन: अदालत में अलोपीदीन छूट गए। कारण: न्याय के कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया था और गवाह लोभ से डाँवाडोल थे।
- कथन: पिता वंशीधर की ईमानदारी से प्रसन्न थे। कारण: पिता ऊपरी आय को ईश्वर की देन मानते थे।
- कथन: अलोपीदीन ने वंशीधर को सरकारी नौकरी दिलवाई। कारण: अलोपीदीन वंशीधर की धर्मनिष्ठा से प्रभावित थे।
- कथन: शहर के लोग अलोपीदीन की निंदा कर रहे थे। कारण: उनमें से अनेक स्वयं भ्रष्ट थे, फिर भी दूसरों की निंदा में रस लेते थे।
- कथन: कहानी का अंत सत्य की जीत से होता है। कारण: कहानी 1914 में प्रकाशित हुई।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

उत्तर-संकेत (अभ्यास सेट)

- A.** 1. 1914 2. दातागंज 3. बदलू सिंह 4. गलत 5. गलत 6. सही
- B.** 1. ऊपरी आय की अपार संभावना, अधिकारियों के पौ-बारह। 2. पिता फूले न समाए, महाजन नरम, कलवार की आशा, पड़ोसियों को जलन। 3. पिता ने, बेटे की ईमानदारी पर व्यंग्य: घर गरीब है, पर बेटा बाहर ईमानदारी दिखा रहा है। 4. न्याय, विद्वता, उपाधियाँ, दाढ़ियाँ, चोंगे सच्चे आदर के पात्र नहीं।
- C.** 1. पूरी कहानी नमक विभाग के दारोगा वंशीधर के चरित्र, ईमानदारी और संघर्ष पर केंद्रित; शीर्षक जिज्ञासा जगाता है। 2. पिता का क्रोध, सिर पीटना, 'अकारथ'; माँ दुखी; पत्नी ने कई दिन बात नहीं की। 3. पहले मुअत्तली, अपमान; फिर अलोपीदीन द्वारा सम्मान, ऊँचा पद।
- D.** स्वतंत्र उत्तर।

अंतिम-रात सारांश

- प्रेमचंद (धनपत राय, 1880 लमही-1936); 1914; आदर्शोन्मुख यथार्थवाद; नमक विभाग, भ्रष्टाचार, 'वकीलों का भी जी ललचाता था'।

- पिता का उपदेश: पीर का मज़ार, चढ़ावा-चादर, वेतन = पूर्णमासी का चाँद, ऊपरी आय = बहता स्रोत; लड़कियाँ घास-फूस; कगारे का वृक्ष।
- वंशीधर: धैर्य मित्र, बुद्धि पथप्रदर्शक, आत्मावलंबन सहायक; जाड़े की रात, जमुना का पुल, 'तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया'; अलोपीदीन (दातागंज), लक्ष्मी पर विश्वास, न्याय-नीति लक्ष्मी के खेलौने; 1 → 40 हजार; 'चालीस लाख पर भी असंभव'; धर्म ने धन को कुचला; बदलू सिंह।
- दुनिया की जीभ जागती थी; पाखंडी भीड़ (ग्वाला, अधिकारी, बाबू, सेठ); अदालत: धर्म बनाम धन, वकीलों की सेना, डिप्टी मजिस्ट्रेट, 'उद्दंडता और विचारहीनता'; मुअत्तली; 'पढ़ना-लिखना अकारथ'।
- अंत: सजा रथ, स्थायी मैनेजर, 6000 वार्षिक, घोड़े, बंगला; 'अयोग्य मनुष्य की ज़रूरत', 'मोती', 'बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ'; गले लगाया।

SAMPLE · notesbazar.in